25 सूरए अल फुरकान

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1

आयत का अनुवाद:
"(ख़ुदा) बहुत बाबरकत है जिसने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर कुरआन नाज़िल किया ताकि सारे जहान के लिए (ख़ुदा के अज़ाब से) डराने वाला हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
ख़ुदा ने कुरआन नाज़िल किया ताकि यह पूरे संसार के लिए चेतावनी बने।

- **हेतु (Reason):**
यह दावा करता है कि कुरआन संपूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक है, लेकिन इसका प्रमाण केवल विश्वास आधारित है। न्याय दर्शन में प्रमाण की चार श्रेणियों (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द) के बिना कोई भी कथन स्वीकार्य नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
भारतीय दर्शन में भगवद गीता जैसे ग्रंथ भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, लेकिन ये सत्य की सार्वभौमिकता पर आधारित हैं और किसी प्रकार का भय पैदा करने की बजाय आंतरिक विकास पर ज़ोर देते हैं।

- **निगमन (Conclusion):**
यह आयत केवल एक समूह विशेष को संबोधित करती है और संपूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक होने का कोई तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं करती। यह न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

आयत 2

आयत का अनुवाद:
"वह ख़ुदा कि सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत उसी की है और उसने (किसी को) न अपना लड़का बनाया और न सल्तनत में उसका कोई शरीक है और हर चीज़ को (उसी ने पैदा किया) फिर उस अन्दाज़े से दुरुस्त किया।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ख़ुदा ने सबकुछ बनाया और उसकी बादशाहत में कोई सहभागी नहीं है।
- **हेतु (Reason):**
  यह दावा करता है कि पूरी सृष्टि का निर्माण ईश्वर ने किया है, लेकिन यह तर्क अनुभवजन्य प्रमाणों (empirical evidence) या प्राकृतिक घटनाओं के अवलोकन के बिना किया गया है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय वैदिक दर्शन में सृष्टि के निर्माण को "सृष्टि-स्थिति-प्रलय" के चक्र से जोड़ा गया है, जो प्राकृतिक और वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत सृष्टि के निर्माण के तर्क और साक्ष्य प्रस्तुत करने में असमर्थ है। इसका कथन न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत का उल्लंघन करता है।

आयत 3

आयत का अनुवाद:
"और लोगों ने उसके सिवा दूसरे-दूसरे माबूद बना रखें हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद

दूसरे के पैदा किए हुए हैं और वह खुद अपने लिए भी न नुक़सान पर क़ाबू रखते हैं न नफ़ा पर और न मौत ही पर इख़्तियार रखते हैं और न ज़िन्दगी पर और न मरने के बाद जी उठने पर।"

चुना गया न्याय तत्वः
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईश्वर के अलावा अन्य सभी माबूद न तो कुछ बना सकते हैं और न ही किसी भी चीज़ पर नियंत्रण रखते हैं।
- **हेतु (Reason):**
  यह कथन अन्य विश्वास प्रणालियों का खंडन करता है, लेकिन इसके लिए कोई तार्किक प्रमाण या ऐतिहासिक संदर्भ प्रस्तुत नहीं करता।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, विभिन्न देवताओं और प्राकृतिक शक्तियों को सृष्टि के अलग-अलग पहलुओं के प्रतिनिधि के रूप में पूजा जाता है। यह पूजा उनके प्रतीकात्मक महत्व पर आधारित है, न कि उनकी शक्ति के दावों पर।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत अन्य विश्वास प्रणालियों को खारिज करती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है। यह न्याय दर्शन के अनुमान सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

आयत 4

आयत का अनुवादः
"और जो लोग काफ़िर हो गए बोल उठे कि ये (कुरआन) तो निरा झूठ है जिसे उस शख़्स (रसूल) ने अपने जी से गढ़ लिया और कुछ और लोगों ने इस इफ़्तिरा परवाज़ी में उसकी मदद भी की है।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  काफ़िर कुरआन को झूठ मानते हैं और इसे मनगढ़ंत कहते हैं।
- **हेतु (Reason):**
  यह कथन केवल काफ़िरों की आलोचना करता है, लेकिन उनकी आपत्तियों का तार्किक उत्तर देने में असमर्थ है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में, किसी भी दावे को खंडित करने के लिए प्रमाण और तर्क आवश्यक होते हैं। केवल आरोप लगाना पर्याप्त नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तार्किक उत्तर देने के बजाय केवल आलोचना करती है। यह न्याय दर्शन के प्रमेय सिद्धांत के विपरीत है।

आयत 5

आयत का अनुवाद:
"और (ये भी) कहा कि (ये तो) अगले लोगों के ढकोसले हैं जिसे उसने किसी से लिखवा लिया है, पस वही सुबह व शाम उसके सामने पढ़ा जाता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  काफ़िर कुरआन को पुराने लोगों की कहानियां मानते हैं।
- **हेतु (Reason):**
  यह दावा केवल काफ़िरों के तर्क को खारिज करता है लेकिन उनके द्वारा प्रस्तुत संदर्भ का खंडन

करने में असमर्थ है।

- **उदाहरण (Example):**
 वैदिक दर्शन में, ग्रंथों को तार्किक और अनुभवजन्य सत्य के आधार पर स्वीकार किया गया है। बिना प्रमाण के किसी भी ग्रंथ को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं माना गया।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत केवल आरोपों को खारिज करती है, लेकिन कोई तार्किक खंडन प्रस्तुत नहीं करती। यह उपमान सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण	सार्वभौमिकता का दावा बिना प्रमाण के किया गया।
2	व्याप्ति	सृष्टि निर्माण के लिए तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं किया।
3	अनुमान	अन्य विश्वास प्रणालियों का खंडन बिना तार्किक आधार के किया गया।
4	प्रमेय	काफ़िरों की आपत्तियों का तार्किक उत्तर नहीं दिया गया।
5	उपमान	आरोपों को खारिज करने का तर्कसंगत आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तार्किक और अनुभवजन्य प्रमाणों की कमी है। न्याय दर्शन के तत्वों जैसे प्रमाण, व्याप्ति, अनुमान, प्रमेय और उपमान का पालन नहीं किया गया है। यह आयतें तात्त्विक दृष्टि से कमजोर हैं और सार्वभौमिक स्वीकृति के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 6

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि इसको उस शख़्स ने नाज़िल किया है जो सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों को ख़ूब जानता है, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत दावा करती है कि क़ुरआन को वह ईश्वर नाज़िल करता है जो छुपी हुई चीज़ों को जानता है।

- **हेतु (Reason):**
  यहाँ छुपी हुई बातों का ज्ञान होने की बात की गई है, लेकिन इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिया गया। यह केवल विश्वास पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द) के मापदंड को पूरा नहीं करता।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में, किसी भी ज्ञान का आधार अनुभवजन्य या तर्कसंगत प्रमाण होता है। केवल किसी के द्वारा कही गई बात को स्वीकार करने के लिए प्रमाण आवश्यक है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल एक दावा प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस आधार नहीं देती। इसलिए यह न्याय दर्शन के प्रमाण तत्व का उल्लंघन करती है।

आयत 7

आयत का अनुवाद:
"और उन लोगों ने (ये भी) कहा कि ये कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है। उसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं नाज़िल होता, कि वह भी उसके साथ (ख़ुदा के अज़ाब से) डराने वाला होता।"

चुना गया न्याय तत्व:
अन्वय (Anvaya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  विरोधी लोग यह सवाल उठाते हैं कि एक साधारण व्यक्ति रसूल कैसे हो सकता है।
- **हेतु (Reason):**
  यहाँ केवल विरोधियों के सवाल को खारिज किया गया है, लेकिन इसका कोई तार्किक उत्तर नहीं दिया गया। यदि रसूल ईश्वर का प्रतिनिधि है, तो उसके साधारण इंसान होने और ईश्वरीय दूत होने के बीच तार्किक संगति प्रस्तुत नहीं की गई।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में अन्वय (सकारात्मक सह-अस्तित्व) और व्यतिरेक (नकारात्मक सह-अस्तित्व) के माध्यम से किसी भी तथ्य की पुष्टि की जाती है। यहाँ इस प्रक्रिया का अभाव है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत विरोधियों के प्रश्न का तार्किक उत्तर देने में असमर्थ है। यह न्याय दर्शन के अन्वय सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती।

आयत 8

आयत का अनुवाद:
"(कम से कम) इसके पास ख़ज़ाना ही (आसमान से) गिरा दिया जाता या (और नहीं तो) उसके पास कोई बाग़ ही होता कि उससे खाता (पीता) और ये ज़ालिम (कुफ़्फ़ार मोमिनों से) कहते हैं कि तुम लोग तो बस ऐसे आदमी की पैरवी करते हो जिस पर जादू कर दिया गया है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  विरोधी यह मांग करते हैं कि रसूल के पास कोई अलौकिक शक्ति होनी चाहिए।
- **हेतु (Reason):**
  यहाँ विरोधियों के सवाल को केवल "ज़ालिम" कहकर खारिज कर दिया गया है। इसके विपरीत, तार्किक रूप से यह समझाने की ज़रूरत थी कि रसूल का उद्देश्य सांसारिक खज़ाने या चमत्कार दिखाना नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्म, ज्ञान और भक्ति का मार्ग समझाने के लिए तर्क और उदाहरणों का सहारा लिया। यहाँ ऐसा कोई प्रयास नहीं किया गया।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल आरोपों को खारिज करती है लेकिन उनके पीछे के तर्क को स्पष्ट करने में असफल रहती है। यह न्याय दर्शन के उपमान सिद्धांत का पालन नहीं करती।

आयत ९

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो कि इन लोगों ने तुम्हारे वास्ते कैसी-कैसी फब्तियां गढ़ी हैं और गुमराह हो गए, तो अब ये लोग किसी तरह राह पर आ ही नहीं सकते।"

चुना गया न्याय तत्व:
वितंडा (Vitanda)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  विरोधी रसूल के खिलाफ फब्तियां गढ़ रहे हैं और गुमराह हैं।
- **हेतु (Reason):**
  यहाँ विरोधियों के तर्कों को केवल "गुमराही" कहकर खारिज कर दिया गया है। न्याय दर्शन में वितंडा या कुतर्क केवल विरोध को दबाने का प्रयास माना जाता है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, किसी भी आरोप या आपत्ति का खंडन तार्किक और प्रमाण आधारित उत्तर के माध्यम से किया जाता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल विरोधियों पर दोषारोपण करती है और न्याय दर्शन के वितंडा सिद्धांत का पालन नहीं करती।

आयत 10

आयत का अनुवाद:
"ख़ुदा तो ऐसा बारबरकत है कि अगर चाहे तो (एक बाग़ क्या चीज़ है) इससे बेहतर बहुतेरे ऐसे बाग़ात तुम्हारे वास्ते पैदा करे जिनके नीचे नहरें जारी हों और (बाग़ात के अलावा उनमें) तुम्हारे वास्ते महल बना दे।"

चुना गया न्याय तत्व:
संभवता (Sambhavana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ख़ुदा यदि चाहे तो रसूल के लिए बाग़ात और महल बना सकता है।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन केवल एक संभावना को प्रस्तुत करता है, लेकिन इसे पूरा करने का कोई कारण या उद्देश्य स्पष्ट नहीं करता।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, किसी भी संभावना को कर्म और प्रयोजन के आधार पर स्पष्ट किया जाता है। यहाँ केवल "यदि चाहे तो" कहकर विषय समाप्त कर दिया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल एक संभावना व्यक्त करती है और न्याय दर्शन के संभवता सिद्धांत का तार्किक उपयोग नहीं करती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	प्रमाण	दावा बिना प्रमाण के किया गया।
7	अन्वय	साधारण इंसान और रसूल के बीच तार्किक संगति स्पष्ट नहीं की गई।
8	उपमान	विरोधियों के आरोप का तार्किक खंडन नहीं किया गया।
9	वितंडा	केवल विरोधियों पर दोषारोपण किया गया।
10	संभवता	केवल संभावना व्यक्त की गई, बिना तर्क या प्रयोजन के।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क और प्रमाण की कमी है। यह आयतें न्याय दर्शन के तत्वों का पालन नहीं करतीं और इनमें तार्किक खामियां स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। केवल संभावना, वितंडा और प्रमाणहीन दावों पर आधारित ये कथन सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार्य नहीं हो सकते।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 11

आयत का अनुवाद:
"(ये सब कुछ नहीं) बल्कि (सच यूँ है कि) उन लोगों ने क़यामत ही को झूठ समझा है और जिस शख़्स ने क़यामत को झूठ समझा उसके लिए हमने जहन्नुम को (दहका के) तैयार कर रखा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत का दावा है कि जो लोग क़यामत को झूठ समझते हैं, उनके लिए जहन्नुम (नरक) तैयार किया

गया है।

- **हेतु (Reason):**
 यह बात केवल एक विश्वास पर आधारित है। क़यामत या जहन्नुम के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान या शब्द प्रमाण का उपयोग नहीं किया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
 न्याय दर्शन में किसी तथ्य को सत्य साबित करने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव या तार्किक अनुमानों का सहारा लिया जाता है। यहाँ ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया।

- **निगमन (Conclusion):**
 आयत का यह दावा केवल भय पैदा करने के उद्देश्य से प्रतीत होता है। यह न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत का उल्लंघन करता है।

आयत 12

आयत का अनुवाद:
"जब जहन्नुम इन लोगों को दूर से देखेगी तो (जोश खाएगी और) ये लोग उसके जोश व ख़रोश की आवाज़ सुनेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
 उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह कहा गया है कि जहन्नुम दूर से ही इन लोगों को देखकर जोश में आएगी और आवाज़ करेगी।

- **हेतु (Reason):**
 यहाँ जहन्नुम को मानवीय गुणों (जैसे देखना, आवाज़ करना, जोश में आना) से युक्त बताया गया है। यह केवल एक प्रतीकात्मक या काल्पनिक चित्रण हो सकता है, लेकिन इसे वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में प्रतीकों का उपयोग तो होता है, लेकिन उन्हें वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता। इस प्रकार की कल्पनाओं के लिए तर्कसंगत आधार आवश्यक है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल भय का वातावरण बनाने के लिए प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करती है, लेकिन यह न्याय दर्शन के उपमान सिद्धांत के अनुसार तार्किक नहीं है।

आयत 13

आयत का अनुवाद:
"और जब ये लोग जंजीरों से जकड़कर उसकी किसी तंग जगह में झोंक दिए जाएँगे तो उस वक़्त मौत को पुकारेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
अन्वय (Anvaya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जहन्नुम में डाले जाने के बाद, लोग मौत को पुकारेंगे।

- **हेतु (Reason):**
  यहाँ एक कथित स्थिति का वर्णन किया गया है, लेकिन इसे सिद्ध करने के लिए कोई तार्किक आधार या प्रमाण नहीं दिया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में तर्क और अनुभव का सहारा लेकर किसी भी कथन को प्रमाणित किया जाता है। यहाँ केवल कल्पना का उपयोग किया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल डराने के लिए एक काल्पनिक स्थिति का वर्णन करती है। इसका कोई तार्किक या अनुभवजन्य आधार नहीं है।

आयत 14

आयत का अनुवाद:
"(उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) आज एक मौत को न पुकारो बल्कि बहुतेरी मौतों को पुकारो (मगर इससे भी कुछ होने वाला नहीं)।"

चुना गया न्याय तत्व:
वितंडा (Vitanda)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 आयत में कहा गया है कि जहन्नुम में रहने वालों को एक मौत नहीं, बल्कि कई मौतें पुकारने के लिए कहा जाएगा।
- **हेतु (Reason):**
 यहाँ केवल एक सजा के रूप में "मौतें पुकारने" की बात कही गई है, लेकिन इसका कोई तार्किक संदर्भ या प्रमाण नहीं दिया गया।
- **उदाहरण (Example):**
 वैदिक और न्याय दर्शन में दंड के सिद्धांत को न्यायपूर्ण और तार्किक रूप से समझाया गया है। यहाँ दंड केवल भय के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के वितंडा सिद्धांत का पालन नहीं करती, क्योंकि इसमें तर्क या दंड का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है।

आयत 15

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि जहन्नुम बेहतर है या हमेशा रहने का बाग़ (बेहष्त) जिसका परहेज़गारों से वायदा किया गया है कि वह उन (के आमाल) का सिला होगा और आख़िरी ठिकाना।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  परहेज़गारों के लिए जन्नत (स्वर्ग) का वादा किया गया है, जो उनके अच्छे कर्मों का परिणाम है।

- **हेतु (Reason):**
  जन्नत और जहन्नुम को केवल अच्छे और बुरे कर्मों से जोड़ा गया है। लेकिन इस सिद्धांत की सार्वभौमिकता को सिद्ध करने के लिए तर्क और उदाहरण का अभाव है।

- **उदाहरण (Example):**
  गीता में अच्छे और बुरे कर्मों के परिणाम का विवरण कर्म सिद्धांत के माध्यम से दिया गया है। यहाँ केवल जन्नत और जहन्नुम का उल्लेख है, लेकिन कर्मों की व्याप्ति (अच्छे कर्मों का स्वर्ग और बुरे कर्मों का नरक से संबंध) को सिद्ध नहीं किया गया।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत के अनुसार तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि इसमें अच्छे और बुरे कर्मों के फल का स्पष्ट और तर्कसंगत विवरण नहीं दिया गया।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	प्रमाण	क़यामत और जहन्नुम का कोई प्रमाण नहीं।
12	उपमान	प्रतीकात्मक भाषा का तर्कसंगत आधार नहीं।
13	अन्वय	जंजीरों और मौत को पुकारने का वर्णन तार्किक नहीं।
14	वितंडा	सजा का उद्देश्य और प्रक्रिया स्पष्ट नहीं।
15	व्याप्ति	अच्छे और बुरे कर्मों का तर्कसंगत विवरण नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में भय और प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग अधिक है, लेकिन तार्किकता और प्रमाणों का अभाव है। यह आयतें न्याय दर्शन के तत्वों (प्रमाण, उपमान, अन्वय, वितंडा, और व्याप्ति) को संतुष्ट नहीं करतीं। अच्छे और बुरे कर्मों के परिणाम का विवरण और दंड का उद्देश्य तर्कसंगत और प्रमाण आधारित होना चाहिए, जो यहाँ नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 16

आयत का अनुवाद:
"जिस चीज़ की ख़्वाहिश करेंगें उनके लिए वहाँ मौजूद होगी (और) वह हमेशा (उसी हाल में) रहेंगें। ये तुम्हारे परवरदिगार पर एक लाज़िमी और माँगा हुआ वायदा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  परहेज़गारों को जन्नत में उनकी सभी इच्छाओं की पूर्ति होगी।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा बिना किसी प्रमाण, अनुभव या तर्क के किया गया है। जन्नत के अस्तित्व और उसमें इच्छाओं की पूर्ति को प्रमाणित करने के लिए न तो प्रत्यक्ष अनुभव है और न ही कोई तार्किक आधार।

- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में ऐसी स्थिति को सत्यापित करने के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान, या शब्द प्रमाण की आवश्यकता होती है। यहाँ केवल एक वादा है, जिसका कोई ठोस आधार नहीं।

- **निगमन (Conclusion):**
  आयत में जन्नत की बातें केवल विश्वास आधारित हैं और इन्हें न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत से सत्यापित नहीं किया जा सकता।

आयत 17

आयत का अनुवाद:
"और जिस दिन ख़ुदा उन लोगों को और जिनकी ये लोग ख़ुदा को छोड़कर परसतिश किया करते हैं (उनको) जमा करेगा और पूछेगा क्या तुम ही ने हमारे उन बन्दों को गुमराह कर दिया था या ये लोग खुद राहे रास्त से भटक गए थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
अन्वय (Anvaya) और व्यवस्थितता (Samyoga)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  क़यामत के दिन अल्लाह पूछेगा कि क्या उन माबूदों ने लोगों को गुमराह किया या वे खुद भटक गए।
- **हेतु (Reason):**
  यहाँ यह तर्क दिया गया है कि गुमराही का कारण या तो उन माबूदों का होना है या स्वयं लोगों का। लेकिन इसमें गुमराही का मूलभूत कारण और प्रक्रिया स्पष्ट नहीं की गई।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में किसी व्यक्ति या समूह के भटकने का कारण स्पष्ट रूप से तर्कसंगत और अनुभवजन्य होना चाहिए। यहाँ केवल दो विकल्प दिए गए हैं, जो अधूरे हैं।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तार्किक पूर्णता और न्याय दर्शन के अन्वय सिद्धांत को संतोषजनक रूप से पूरा नहीं करती। गुमराही का मूल कारण स्पष्ट नहीं है।

आयत 18

आयत का अनुवाद:
"(उनके माबूद) अर्ज़ करेंगें- सुबहान अल्लाह (हम तो ख़ुद तेरे बन्दे थे) हमें ये किसी तरह ज़ेबा न था कि हम तुझे

छोड़कर दूसरे को अपना सरपरस्त बनाते (फिर अपने को क्यों कर माबूद बनाते)। मगर बात तो ये है कि तू ही ने इनको बाप-दादाओं को चैन दिया-यहाँ तक कि इन लोगों ने (तेरी) याद भुला दी और ये ख़ुद हलाक होने वाले लोग थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu) और व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  माबूद कहते हैं कि वे खुद अल्लाह के बंदे हैं और उन्होंने किसी को गुमराह नहीं किया।

- **हेतु (Reason):**
  गुमराही के लिए लोगों को उनके पूर्वजों की आरामदायक स्थिति और ईश्वर को भूलने का कारण बताया गया है। लेकिन यह तर्क अधूरा और अव्याप्त है।

- **उदाहरण (Example):**
  गीता जैसे ग्रंथों में आत्मा की प्रवृत्तियों और कर्मों के आधार पर स्पष्ट कारण दिए गए हैं। यहाँ केवल "भूलने" का कारण दिया गया है, जो न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत के अनुरूप नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
  आयत में दिए गए तर्क गुमराही के मूल कारणों को तार्किक रूप से स्पष्ट नहीं करते और व्याप्ति का उल्लंघन करते हैं।

आयत 19

आयत का अनुवाद:
"तब (काफ़िरों से कहा जाएगा कि) तुम जो कुछ कह रहे हो उसमें तो तुम्हारे माबूदों ने तुम्हें झूठला दिया। तो अब तुम न (हमारे अज़ाब के) टाल देने की सकत रखते हो, न किसी से मदद ले सकते हो और (याद रखो) तुममें से जो ज़ुल्म करेगा हम उसको बड़े (सख़्त) अज़ाब का (मज़ा) चखाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
वितंडा (Vitanda)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  काफ़िरों के माबूद उन्हें झूठा साबित करेंगे और वे अज़ाब से बच नहीं पाएंगे।

- **हेतु (Reason):**
  माबूदों द्वारा झूठला दिए जाने और अज़ाब मिलने का दावा बिना किसी प्रमाण के है। यह केवल भय पैदा करने का प्रयास है।

- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में दंड के पीछे स्पष्ट कारण और उद्देश्य का होना आवश्यक है। यहाँ केवल अज़ाब का वर्णन है, जो वितंडा की श्रेणी में आता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत वितंडा के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें न तो तर्क है और न ही दंड का उद्देश्य स्पष्ट किया गया है।

आयत 20

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे, वह सब के सब यक़ीनन बिला शक खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे। और हमने तुम में से एक को एक का (ज़रिया) आज़माइश बना दिया। (मुसलमानों) क्या तुम अब भी सब्र करते हो (या नहीं)। और तुम्हारा परवरदिगार (सब की) देख भाल कर रहा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  पैग़म्बरों के मानवीय गुणों को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि वे भी अन्य मनुष्यों की तरह खाते-पीते और बाजार में चलते थे।

- **हेतु (Reason):**
 पैग़ाम्बरों की मानवीयता को स्वीकार करना तार्किक है, लेकिन इसे ईश्वरीय दूत के रूप में स्थापित करने का प्रमाण यहाँ अनुपस्थित है।

- **उदाहरण (Example):**
 वैदिक ग्रंथों में अवतारों और ऋषियों को मानवीय और दिव्य गुणों के समन्वय के साथ तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यहाँ केवल सामान्य गतिविधियों का वर्णन है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत पैग़ाम्बरों की मानवीयता को दर्शाने में सफल है, लेकिन उन्हें ईश्वरीय दूत सिद्ध करने के लिए पर्याप्त प्रमाण नहीं देती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	**प्रमाण**	**जन्नत के अस्तित्व और वादों का कोई प्रमाण नहीं।**
17	**अन्वय और सम्योग**	**गुमराही के मूल कारण स्पष्ट नहीं।**
18	**व्याप्ति**	**कारणों का तर्कपूर्ण विश्लेषण नहीं।**
19	**वितंडा**	**दंड का उद्देश्य और प्रक्रिया स्पष्ट नहीं।**
20	**उपमान**	**पैग़ाम्बरों की मानवीयता को तो दर्शाया गया, लेकिन दिव्यता का प्रमाण नहीं।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दिए गए तर्क और दावे न्याय दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों (प्रमाण, अन्वय, व्याप्ति, वितंडा, उपमान) के अनुसार तर्कसंगत नहीं हैं। आयतों में विश्वास और भय पर अधिक बल है, जबकि तार्किकता और प्रमाण का अभाव है। मानवता को निर्देश देने वाले दावे स्पष्ट और तर्कपूर्ण होने चाहिए, जो यहाँ नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"और जो लोग (क़यामत में) हमारी हुज़ूरी की उम्मीद नहीं रखते कहा करते हैं कि आख़िर फ़रिश्ते हमारे पास क्यों नहीं नाज़िल किए गए या हम अपने परवरदिगार को (क्यों नहीं) देखते। उन लोगों ने अपने जी में अपने को (बहुत) बड़ा समझ लिया है और बड़ी सरकशी की।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जो लोग क़यामत और अल्लाह पर विश्वास नहीं रखते, वे फ़रिश्तों या खुदा को देखने की माँग करते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  इनकार करने वालों पर यह आरोप लगाया गया है कि वे अहंकार और विद्रोह में हैं। लेकिन यह केवल एक भावनात्मक आक्षेप है, इसे तर्क या प्रमाण द्वारा प्रमाणित नहीं किया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  यदि किसी व्यक्ति ने फ़रिश्तों या अल्लाह के अस्तित्व पर सवाल उठाया, तो उसे तार्किक उत्तर या प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए। वैदिक दर्शन में, ईश्वर का अस्तित्व उपनिषदों में तर्क और अनुभवजन्य आधार पर समझाया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के अभाव में केवल विश्वास पर आधारित है। अहंकार का तर्क तार्किकता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

आयत 22

आयत का अनुवादः
"जिस दिन ये लोग फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन गुनाहगारों को कुछ खुशी न होगी और फ़रिश्तों को देखकर कहेंगे, 'दूर-दफान!'"

चुना गया न्याय तत्वः
अन्वय (Anvaya)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  गुनाहगार फ़रिश्तों को देखकर भयभीत होंगे और दूर होने की बात कहेंगे।

- **हेतु (Reason):**
  फ़रिश्तों के भय और उनके देखे जाने की बात केवल भविष्यवाणी है, जिसे अनुभव या तर्क द्वारा सत्यापित नहीं किया जा सकता।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में कर्म और उनके फल का विवरण स्पष्ट रूप से दिया गया है, जबकि यहाँ केवल भय का वर्णन है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह कथन केवल कल्पना आधारित है और इसे तार्किक या अनुभवजन्य रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 23

आयत का अनुवादः
"और उन लोगों ने (दुनिया में) जो कुछ नेक काम किए हैं, हम उसकी तरफ तवज्जों करेंगें तो हम उसको (गोया) उड़ती हुयी ख़ाक बनाकर (बरबाद कर) देंगे।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  गुनाहगारों के अच्छे कर्म क़यामत के दिन अमान्य कर दिए जाएँगे।

- **हेतु (Reason):**
  अच्छे कर्मों को अमान्य करने का कारण केवल उनके विश्वास की कमी बताई गई है। यह तर्क धर्मनिरपेक्ष नैतिकता के विरुद्ध है, जो अच्छे कर्मों को सार्वभौमिक रूप से मान्यता देती है।

- **उदाहरण (Example):**
  गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) कर्म के महत्व और उसके फल के बारे में तर्क देती है। अच्छे कर्मों का महत्व उनके परिणामों के आधार पर होता है, न कि व्यक्ति के धार्मिक विश्वास पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत का उल्लंघन करती है। अच्छे कर्मों का मूल्य किसी के विश्वास पर निर्भर नहीं होना चाहिए।

आयत 24

आयत का अनुवाद:
"उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना भी बेहतर होगा और आरामगाह भी अच्छी से अच्छी।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जन्नत को श्रेष्ठ ठिकाना और आरामगाह बताया गया है।

- **हेतु (Reason):**
  जन्नत का वर्णन केवल विश्वास और कल्पना पर आधारित है। इसके अस्तित्व और श्रेष्ठता के लिए कोई तर्क या उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में स्वर्ग (स्वर्ग लोक) को भी एक अस्थायी अवस्था बताया गया है और मोक्ष को सर्वोच्च

स्थान बताया गया है। यह तर्क आधारित है और अनुभूतियों पर आधारित है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत जन्नत के वर्णन को तार्किक रूप से प्रमाणित नहीं करती और केवल भावनात्मक अपील करती है।

आयत 25

आयत का अनुवाद:
"और जिस दिन आसमान बदली के सबब से फट जाएगा और फ़रिश्ते कसरत से (जूक दर जूक) नाज़िल किए जाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
संभवता (Samshaya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आसमान फटने और फ़रिश्तों के उतरने की बात क़यामत के दिन के लिए कही गई है।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा किसी अनुभव या वैज्ञानिक प्रमाण पर आधारित नहीं है। आसमान का फटना और फ़रिश्तों का उतरना केवल प्रतीकात्मक हो सकता है, लेकिन इसे सटीक रूप से नहीं बताया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में प्रलय की अवधारणा (संपूर्ण सृष्टि का अंत) को तार्किक और ब्रह्मांडीय चक्र के आधार पर समझाया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तार्किक रूप से अस्पष्ट है और संभाव्यता (संशय) को पुष्ट नहीं करती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	प्रमाण	केवल विश्वास आधारित आक्षेप, तर्क अनुपस्थित।
22	अन्वय	फ़रिश्तों के भय का दावा अनुभव या तर्क से सिद्ध नहीं।
23	व्याप्ति	अच्छे कर्मों का मूल्य धार्मिक विश्वास पर निर्भर नहीं हो सकता।
24	उपमान	जन्नत के अस्तित्व और श्रेष्ठता का कोई प्रमाण नहीं।
25	संभवता	आसमान के फटने और फ़रिश्तों के उतरने का दावा प्रमाणहीन है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में किए गए दावे न्याय दर्शन के तत्वों (प्रमाण, अन्वय, व्याप्ति, उपमान, संभवता) की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। ये तर्क की बजाय विश्वास और कल्पना पर आधारित हैं। धार्मिक दावों को तर्कसंगत और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य बनाने के लिए स्पष्ट प्रमाण और तर्क प्रस्तुत किए जाने चाहिए।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 26

आयत का अनुवाद:
"उस दिन की सल्तनत ख़ास ख़ुदा ही के लिए होगी और वह दिन काफिरों पर बड़ा सख़्त होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  क़यामत के दिन सत्ता केवल ख़ुदा की होगी और यह दिन काफ़िरों के लिए कष्टकारी होगा।
- **हेतु (Reason):**
  यह दावा अनिवार्य रूप से केवल ईश्वर पर विश्वास न करने वालों को कष्ट देने की बात करता है। तर्क के आधार पर, किसी के विचार या विश्वास के कारण दंड देना अन्यायपूर्ण है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दृष्टिकोण में न्याय कर्म के अनुसार होता है, न कि केवल किसी विश्वास या धार्मिक पहचान के आधार पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के तत्व "व्याप्ति" के खिलाफ है, क्योंकि न्याय का आधार केवल विश्वास न होकर कर्म होना चाहिए।

आयत 27

आयत का अनुवाद:
"और जिस दिन ज़ुल्म करने वाला अपने हाथ (मारे अफ़सोस के) काटने लगेगा और कहेगा काश, रसूल के साथ मैं भी (दीन का सीधा) रास्ता पकड़ता।"

चुना गया न्याय तत्व:
अन्वय (Anvaya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  क़यामत के दिन पथभ्रष्ट व्यक्ति पछताएगा कि उसने सही मार्ग नहीं चुना।

- **हेतु (Reason):**
  पछताने की बात को केवल कल्पना के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इसे प्रमाणित करने के लिए कोई अनुभवजन्य या तर्कपूर्ण आधार नहीं दिया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में, आत्मा के सच्चे ज्ञान और चेतना को सर्वोच्च मार्ग माना गया है, जो किसी व्यक्ति विशेष या एक धर्म से सीमित नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल एक डराने वाला दृश्य प्रस्तुत करती है और इसे तर्क की कसौटी पर परखा नहीं जा सकता।

आयत 28

आयत का अनुवाद:
"हाए अफसोस, काश मैं फ़ला शख़्स को अपना दोस्त न बनाता।"

चुना गया न्याय तत्व:
संबंध (Sambandha)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  गलत संगत के कारण व्यक्ति पथभ्रष्ट होता है और पछताता है।

- **हेतु (Reason):**
  दोस्ती और पथभ्रष्टता के बीच सीधा संबंध स्थापित करने के लिए तर्कपूर्ण आधार नहीं दिया गया। यह दावा व्यक्तिगत जिम्मेदारी की अनदेखी करता है।

- **उदाहरण (Example):**
  गीता में (अध्याय 6, श्लोक 5) कहा गया है कि व्यक्ति स्वयं ही अपना मित्र और शत्रु है। यह विचार स्वतंत्रता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी को बढ़ावा देता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत संबंध (संबंध) के सिद्धांत को तार्किक रूप से प्रमाणित नहीं करती और पूरी तरह दूसरों पर दोष डालती है।

आयत 29

आयत का अनुवाद:
"बेशक, यक़ीनन उसने हमारे पास नसीहत आने के बाद मुझे बहकाया और शैतान तो आदमी को रुसवा करने वाला ही है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  शैतान का व्यक्ति को बहकाना और रुसवा करना उसका स्वाभाविक गुण है।
- **हेतु (Reason):**
  शैतान के अस्तित्व और उसके कृत्यों के लिए कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया। यह केवल विश्वास पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में "माया" और "अविद्या" को व्यक्ति की अज्ञानता का कारण बताया गया है, जो आत्मज्ञान से दूर करती हैं। यह विचार अनुभव और तर्क पर आधारित है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल शैतान के अस्तित्व को मानकर तर्क देती है, जबकि इसका कोई तार्किक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।

आयत 30

आयत का अनुवाद:
"और (उस वक़्त) रसूल (बारगाहे ख़ुदा वन्दी में) अर्ज़ करेंगे कि ऐ मेरे परवरदिगार, मेरी क़ौम ने तो इस कुरआन को बेकार बना दिया।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  कुरआन को न मानने वालों के लिए रसूल अफसोस प्रकट करेंगे।
- **हेतु (Reason):**
  कुरआन को अस्वीकार करने के परिणामों के बारे में केवल एकतरफा दावे किए गए हैं, जो तर्कपूर्ण

संवाद या प्रतिस्पर्धात्मक विचारधारा को नजरअंदाज करते हैं।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक साहित्य में भी असहमति को स्वीकार करने की परंपरा रही है। तर्क और संवाद को "विवेक" का आधार माना गया है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत आलोचनात्मक सोच को हतोत्साहित करती है और एकतरफा विश्वास पर आधारित है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	**व्याप्ति**	**न्याय को विश्वास की बजाय कर्म पर आधारित होना चाहिए।**
27	**अन्वय**	**पछतावे की कल्पना प्रमाण या तर्क के बिना है।**
28	**संबंध**	**गलत संगत का दोष, व्यक्तिगत जिम्मेदारी को नजरअंदाज करता है।**
29	**प्रमेय**	**शैतान का अस्तित्व केवल विश्वास पर आधारित है।**
30	**प्रमाण**	**आलोचनात्मक सोच को अस्वीकार करता है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में व्यक्त विचार न्याय दर्शन के तत्वों (व्याप्ति, अन्वय, संबंध, प्रमेय, प्रमाण) की तार्किक कसौटी पर खरे नहीं उतरते। यह तर्क और अनुभवजन्य प्रमाण के अभाव में केवल विश्वास और भय पर आधारित हैं। धार्मिक दावों को सार्वभौमिक और तार्किक बनाने के लिए स्पष्ट प्रमाण और संवाद की आवश्यकता होती है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 31

आयत का अनुवाद:
"और हमने (गोया ख़ुद) गुनाहगारों में से हर नबी के दुश्मन बना दिए हैं और तुम्हारा परवरदिगार हिदायत और मददगारी के लिए काफी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
साहचर्य (Samavaya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  हर नबी के लिए गुनाहगार दुश्मन बनाए गए हैं, और ख़ुदा ही हिदायत और मदद के लिए पर्याप्त है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क कि नबियों के दुश्मन "ख़ुदा द्वारा बनाए गए हैं," जिम्मेदारी का स्थानांतरण करता है। अगर दुश्मन ईश्वर द्वारा बनाए गए हैं, तो उनके गुनाह के लिए उन्हें दोषी ठहराना तर्कसंगत नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में व्यक्ति अपने कर्मों का स्वयं उत्तरदायी होता है। गीता (अध्याय 3, श्लोक 9) के अनुसार, व्यक्ति को अपने कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायित्व लेना चाहिए।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में गुनाहगारों के दुश्मन होने की बात साहचर्य के तत्व को कमजोर करती है क्योंकि यह कर्म और परिणाम के सिद्धांत को अस्वीकार करती है।

आयत 32

आयत का अनुवाद:
"और कुफ्फार कहने लगे कि उनके ऊपर (आख़िर) कुरआन का कुल (एक ही दफा) क्यों नहीं नाजिल किया गया। (हमने) इस तरह इसलिए (नाजिल किया) ताकि तुम्हारे दिल को तस्कीन देते रहें और हमने इसको ठहर-ठहर कर नाजिल किया।"

चुना गया न्याय तत्व:
अर्थापत्ति (Arthapatti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  कुरआन को धीरे-धीरे नाजिल किया गया ताकि दिल को तसल्ली मिल सके।
- **हेतु (Reason):**
  इस दावे के पीछे कोई तर्कपूर्ण आधार नहीं दिया गया है। अगर यह ईश्वर का वचन है, तो इसे एक बार में देना अधिक प्रभावशाली और सार्वभौमिक हो सकता था।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक ऋचाओं को प्राचीन ऋषियों ने तत्काल और संपूर्ण रूप में प्राप्त किया था। यह ज्ञान समय के साथ धीरे-धीरे नहीं दिया गया।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत "अर्थापत्ति" के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसके पीछे का उद्देश्य और प्रक्रिया तार्किक रूप से संतोषजनक नहीं है।

आयत 33

आयत का अनुवाद:
"और (ये कुफ्फार) चाहे कैसी ही (अनोखी) मसल बयान करेंगे मगर हम तुम्हारे पास (उनका) बिल्कुल ठीक और निहायत उम्दा (जवाब) बयान कर देंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जो भी मसल (तर्क) पेश किया जाएगा, उसका सही और बेहतरीन उत्तर दिया जाएगा।
- **हेतु (Reason):**
  इस दावे का कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया। केवल दावा करना तर्क की कसौटी पर खरा नहीं

उतरता।

- **उदाहरण (Example):**
 वैदिक ग्रंथों में तर्क और संवाद को प्राथमिकता दी गई है। "ब्रह्म सूत्र" में हर विरोधी तर्क का विस्तार से उत्तर दिया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत प्रमाण के अभाव में तर्क को केवल दावे के रूप में प्रस्तुत करती है।

आयत 34

आयत का अनुवाद:
"जो लोग (क़यामत के दिन) अपने-अपने मोहसिनों के बल जहन्नुम में घसीटे जाएंगे, वही लोग बदतर जगह में होंगे और सबसे ज़्यादा राहे रास्त से भटकने वाले होंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
 व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 जो लोग नास्तिकता या पाप में लिप्त हैं, उन्हें जहन्नुम में घसीटा जाएगा।

- **हेतु (Reason):**
 क़यामत और जहन्नुम की अवधारणा का कोई भौतिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं दिया गया। यह केवल भय उत्पन्न करने के लिए उपयोग किया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
 वैदिक दर्शन में पुनर्जन्म और कर्मफल का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है, जो तर्क और अनुभव पर आधारित है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत "व्याप्ति" के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह दावे को बिना किसी आधार के

प्रस्तुत करती है।

आयत 35

आयत का अनुवाद:
"और अलबत्ता हमने मूसा को किताब (तौरात) अता की और उनके साथ उनके भाई हारून को (उनका) वज़ीर बनाया।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  मूसा को तौरात दी गई और हारून को उनका सहायक बनाया गया।

- **हेतु (Reason):**
  मूसा और हारून के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को सिद्ध करने के लिए कोई भौतिक प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक साहित्य में ऋषियों को प्राप्त ज्ञान का उल्लेख प्रमाण सहित किया गया है, जिसे तर्क और अनुभव के आधार पर समझा जा सकता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत उपमान के तत्व को कमजोर करती है क्योंकि यह किसी भी तर्कपूर्ण तुलना को प्रस्तुत नहीं करती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

31	**साहचर्य**	**गुनाहगारों का दुश्मन होना न्याय के सिद्धांत के खिलाफ है।**
32	**अर्थापत्ति**	**कुरआन को धीरे-धीरे नाजिल करने का तर्क तार्किक नहीं है।**
33	**प्रमाण**	**मसल (तर्क) का जवाब देने का दावा बिना प्रमाण के है।**
34	**व्याप्ति**	**क़यामत और जहन्नुम का भय प्रमाणित नहीं है।**
35	**उपमान**	**मूसा और हारून के दावे को तर्कपूर्ण आधार नहीं दिया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में न्याय दर्शन के तत्वों का उपयोग करके किया गया विश्लेषण यह दर्शाता है कि इनके दावे तर्क, अनुभव और प्रमाण के अभाव में केवल विश्वास और भय पर आधारित हैं। धार्मिक विचारधारा को सार्वभौमिक और तार्किक बनाने के लिए प्रमाण और विवेकपूर्ण तर्क आवश्यक हैं।

आयत 36-40 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 36

आयत का अनुवाद:
"तो हमने कहा तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जो हमारी (कुदरत की) निशानियों को झुठलाते हैं। जाओ (और समझाओ जब न माने) तो हमने उन्हें खूब बरबाद कर डाला।"

चुना गया न्याय तत्व:
अर्थापत्ति (Arthapatti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जो लोग ईश्वर की निशानियों को न मानें, उन्हें तबाही का सामना करना पड़ेगा।

- **हेतु (Reason):**
  दंड देने का कारण केवल अविश्वास है। यह न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन करता है, क्योंकि किसी को मानने या न मानने का विकल्प स्वतंत्रता का हिस्सा है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में "अहिंसा परमो धर्मः" की शिक्षा दी गई है, जहां सजा का उद्देश्य सुधार है, न कि संपूर्ण विनाश।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में प्रस्तुत तर्क "अर्थापत्ति" के सिद्धांत का उल्लंघन करता है, क्योंकि विनाश का उद्देश्य और तार्किकता स्पष्ट नहीं है।

आयत 37

आयत का अनुवाद:
"और नूह की क़ौम को जब उन लोगों ने (हमारे) पैग़म्बरों को झुठलाया, तो हमने उन्हें डुबो दिया और हमने उनको लोगों (के हैरत) की निशानी बनाया और हमने ज़ालिमों के वास्ते दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह की क़ौम को उनके अविश्वास के कारण डुबोकर नष्ट कर दिया गया।

- **हेतु (Reason):**
  प्राकृतिक आपदा को ईश्वर का प्रकोप बताना तर्कसंगत नहीं है। आपदाओं के पीछे भौतिक और वैज्ञानिक कारण होते हैं।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वर की सजा नहीं माना गया है, बल्कि इसे भौतिक प्रक्रियाओं और व्यक्ति के कर्मों का परिणाम समझा गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में प्राकृतिक आपदा को दैवी दंड बताने का तर्क "व्याप्ति" के सिद्धांत के विरुद्ध है।

आयत 38

आयत का अनुवाद:
"और (इसी तरह) आद और समूद और नहर वालों और उनके दरम्यान बहुत सी जमाअतों को (हमने हलाक कर डाला)।"

चुना गया न्याय तत्व:
साधारण करण (Karana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आद, समूद, और अन्य क़ौमों को अविश्वास के कारण नष्ट कर दिया गया।
- **हेतु (Reason):**
  किसी पूरे समुदाय को उनके विश्वास के कारण नष्ट कर देना अत्याचार के दायरे में आता है। यह नैतिकता और करुणा के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक शिक्षा में समाज के सुधार के लिए संवाद और सहअस्तित्व की बात की गई है, न कि हिंसा या नष्ट करने की।
- **निगमन (Conclusion):**
  आयत में किए गए दावे "साधारण करण" के न्याय तत्व के विपरीत हैं, क्योंकि संपूर्ण विनाश का औचित्य तर्कसंगत नहीं है।

आयत 39

आयत का अनुवाद:
"और हमने हर एक से मिसालें बयान कर दी थीं और (खूब समझाया) मगर न माना।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 सभी को समझाया गया और मिसालें दी गईं, लेकिन उन्होंने फिर भी ईमान नहीं लाया।

- **हेतु (Reason):**
 जो मिसालें दी गईं, उनकी तार्किकता या सार्वभौमिकता पर चर्चा नहीं की गई। बिना संदर्भ के दावे अप्रभावी रहते हैं।

- **उदाहरण (Example):**
 उपनिषदों में ज्ञान को स्पष्ट करने के लिए तर्क और संवाद का सहारा लिया गया, जैसे "मुण्डक उपनिषद" में।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत प्रमाण और तर्क के अभाव में मिसालें पेश करने का दावा करती है, जो न्याय तत्व के अनुरूप नहीं है।

आयत 40

आयत का अनुवाद:
"हमने उनको खूब सत्यानाश कर छोड़ा और ये लोग (कुफ़्फ़ारे मक्का) उस बस्ती पर (हो) आए हैं जिस पर (पत्थरों की) बुरी बारिश बरसाई गई, तो क्या उन लोगों ने इसको देखा न होगा मगर (बात ये है कि) ये लोग मरने के बाद जी उठने की उम्मीद नहीं रखते।"

चुना गया न्याय तत्व:
 उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 जिन लोगों ने अविश्वास किया, उन पर पत्थरों की बारिश की गई।

- **हेतु (Reason):**
 किसी विशेष घटना का वर्णन भय उत्पन्न करने के लिए किया गया है, न कि तर्क या प्रमाण के

आधार पर।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक शिक्षा में भय नहीं, बल्कि ज्ञान को महत्व दिया गया है। "तैत्तिरीय उपनिषद" में भय से नहीं, बल्कि प्रेम और करुणा से ईश्वर को जानने का उल्लेख है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत "उपमान" के तत्व को कमजोर करती है क्योंकि इसमें कथित घटना का उपयोग तर्क के बजाय भय उत्पन्न करने के लिए किया गया है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	अर्थापत्ति	विनाश का उद्देश्य और तार्किकता स्पष्ट नहीं है।
37	व्याप्ति	प्राकृतिक आपदाओं को दैवी दंड बताना तर्कसंगत नहीं है।
38	साधारण करण	विश्वास के आधार पर पूरे समुदाय का विनाश अनुचित है।
39	प्रमाण	मिसालें और तर्क सार्वभौमिक और स्पष्ट नहीं हैं।
40	उपमान	भय उत्पन्न करने के लिए घटना का उपयोग किया गया है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत तर्क नैतिकता, करुणा और न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करते हैं। "न्याय दर्शन" के तत्वों के आधार पर, इन आयतों में प्रमाण, तर्क और उद्देश्य की स्पष्टता का अभाव है। ऐसे दावे जो भय, विनाश, और पूर्ण निष्ठा की मांग पर आधारित हों, उन्हें सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत करना कठिन है।

आयत 41-45 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 41

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) ये लोग तुम्हें जब देखते हैं तो तुमसे मसख़रा पन ही करने लगते हैं कि क्या यही वह (हज़रत) हैं जिन्हें अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  काफिर रसूल का मजाक उड़ाते हैं और उन्हें ईश्वर का संदेशवाहक मानने से इंकार करते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  रसूल का दैवी संदेशवाहक होना केवल दावे पर आधारित है; इसका कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक परंपरा में प्रमाण का महत्त्व सर्वोपरि है। सत्य को समझने के लिए तर्क, अनुभव और वेदांत प्रमाण आवश्यक हैं। केवल दावे पर विश्वास करना अंधश्रद्धा कहलाएगा।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के अभाव में न्याय दर्शन के सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

आयत 42

आयत का अनुवाद:
"अगर बुतों की परसतिश पर साबित क़दम न रहते तो इस शख़्स ने हमको हमारे माबूदों से बहका दिया था, और बहुत जल्द (क़यामत में) जब ये लोग अज़ाब को देखेंगे तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि राहे रास्त से कौन ज़्यादा भटका हुआ था।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  बुतों की पूजा करने वाले अपने विश्वास पर अडिग रहते हैं और खुद को सही मानते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  "बुतों की परसतिश गलत है" का तर्क स्वयं अनुचित है, क्योंकि यह अन्य विश्वास प्रणालियों के प्रति असहिष्णुता को दर्शाता है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक शिक्षा में सभी धर्मों और विश्वास प्रणालियों के प्रति सहिष्णुता और आदर का उपदेश दिया गया है। "एकं सद विप्रा बहुधा वदन्ति" (सत्य एक है, विद्वान उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं)।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत "उपमान" तत्व का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें अन्य धार्मिक विश्वासों का निरादर किया गया है।

आयत 43

आयत का अनुवाद:
"क्या तुमने उस शख़्स को भी देखा है जिसने अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिश को अपना माबूद बना रखा है तो क्या तुम उसके जिम्मेदार हो सकते हो (कि वह गुमराह न हो)?"

चुना गया न्याय तत्व:
अर्थापत्ति (Arthapatti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जिसने अपनी इच्छाओं को माबूद बना लिया है, वह गुमराह हो चुका है।

- **हेतु (Reason):**
  किसी की व्यक्तिगत इच्छाओं को दोष देना उचित नहीं है जब तक कि वे नैतिकता या समाज को नुकसान नहीं पहुंचातीं।

- **उदाहरण (Example):**
  गीता (3.37) में कहा गया है कि इच्छाओं पर नियंत्रण की शिक्षा दी जाती है, लेकिन इन्हें "पाप" कहना या इनसे ईश्वर के प्रति निष्ठा मापना अनुचित है।

- **निगमन (Conclusion):**
  आयत में "अर्थापत्ति" तत्व का उपयोग दोषपूर्ण है, क्योंकि इच्छाओं को माबूद मानने का कोई ठोस आधार प्रस्तुत नहीं किया गया है।

आयत 44

आयत का अनुवाद:
"क्या ये तुम्हारा ख़्याल है कि इन (कुफ़्फारों) में अक्सर (बात) सुनते या समझते हैं (नहीं) ये तो बस बिल्कुल मिस्ल जानवरों के हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा रहे (रास्त) से भटके हुए।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  अविश्वासियों को जानवरों से भी निम्न और भटका हुआ बताया गया है।

- **हेतु (Reason):**
  दूसरों को जानवरों से भी नीचा बताना असहिष्णुता और अपमानजनक दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह नैतिकता और न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दृष्टिकोण में, हर प्राणी के प्रति सम्मान का भाव रखा जाता है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का सिद्धांत सभी प्राणियों को समान दृष्टि से देखता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में "उपमान" तत्व का दुरुपयोग किया गया है, क्योंकि यह दूसरों का अपमान और उनकी मानवीय गरिमा को ठेस पहुँचाता है।

आयत 45

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) क्या तुमने अपने परवरदिगार की कुदरत की तरफ नज़र नहीं की कि उसने क्योंकर साये को फैला दिया? अगर वह चाहता तो उसे (एक ही जगह) ठहरा हुआ कर देता। फिर हमने आफ़ताब को (उसकी शिनाख़्त के वास्ते) उसका रहनुमा बना दिया।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  साए का फैलना और सूरज का उसकी पहचान के लिए उपयोग ईश्वर की शक्ति का प्रमाण है।

- **हेतु (Reason):**
  प्राकृतिक घटनाओं को दैवी शक्ति का प्रमाण मानना तभी उचित हो सकता है जब इसे वैज्ञानिक और तार्किक आधार पर सिद्ध किया जाए।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक ग्रंथों में प्राकृतिक घटनाओं को पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) के आधार पर समझाया गया है, न कि इसे अंधविश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में प्राकृतिक घटनाओं को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है। यह न्याय दर्शन के "प्रमाण" तत्व का उल्लंघन है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	प्रमाण	रसूल का संदेशवाहक होना बिना प्रमाण के बताया गया।

42	उपमान	अन्य विश्वास प्रणालियों के प्रति असहिष्णुता।
43	अर्थापत्ति	इच्छाओं को माबूद कहना तार्किक दोष है।
44	उपमान	अविश्वासियों का जानवरों से तुलना करना असंवेदनशील है।
45	प्रमाण	प्राकृतिक घटनाओं को तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क और प्रमाण की स्पष्टता का अभाव है। यह अन्य विश्वास प्रणालियों के प्रति असहिष्णुता और व्यक्तिगत विचारों पर अनुचित आक्षेप को दर्शाता है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, ऐसा दृष्टिकोण सार्वभौमिक और तार्किक सत्य नहीं हो सकता।

आयत 46-50 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 46

आयत का अनुवाद:
"फिर हमने उसको थोड़ा थोड़ा करके अपनी तरफ़ खीच लिया।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि ईश्वर ने किसी व्यक्ति को अपनी ओर खींच लिया, परंतु इसका कोई स्पष्ट कारण या प्रमाण नहीं दिया गया।
- **हेतु (Reason):**
  "खींचना" एक मानसिक या भौतिक प्रक्रिया हो सकती है, जिसे समझने के लिए तर्क की आवश्यकता है, लेकिन इस आयत में इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं दिया गया।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक विचारधारा में किसी के "आध्यात्मिक विकास" को विशिष्ट प्रमाणों और परिकल्पनाओं से

जोड़ा जाता है, जैसे आत्मा का शुद्धिकरण और मोक्ष की प्राप्ति, न कि अस्पष्ट रूप से किसी को खींच लेने के सिद्धांत से।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तार्किक रूप से अस्पष्ट है, क्योंकि इसमें किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रक्रिया का स्पष्टीकरण नहीं किया गया है।

आयत 47

आयत का अनुवाद:
"और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने तुम्हारे वास्ते रात को पर्दा बनाया और नींद को राहत और दिन को (कारोबार के लिए) उठ खड़ा होने का वक़्त बनाया।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि रात और दिन का निर्माण और उनका उद्देश्य ईश्वर का काम है।
- **हेतु (Reason):**
  रात और दिन का अस्तित्व और उद्देश्य एक स्वाभाविक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो खगोलशास्त्र, भूगोल और जैविक विज्ञान द्वारा स्पष्ट रूप से समझाया जा सकता है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से सांख्य योग में, प्राकृतिक घटनाओं को दिव्य क्रियाओं से जोड़ने के बजाय वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा जाता है, जैसे पृथ्वी की घूर्णन गति से रात और दिन का निर्माण होता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत "उपमान" तत्व के तहत वैज्ञानिक रूप से सिद्ध प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़ती है, जो न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से तर्कसंगत नहीं है।

आयत 48

आयत का अनुवाद:
"और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने अपनी रहमत (बारिश) के आगे-आगे हवाओं को खुश ख़बरी देने के लिए (पेश ख़ेमा बना के) भेजा और हम ही ने आसमान से बहुत पाक और सुथरा हुआ पानी बरसाया।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि बारिश एक दैवी घटना है, जो भगवान की कृपा से होती है।
- **हेतु (Reason):**
  बारिश एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिसे मौसम विज्ञान द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है, और इसे केवल एक दैवी कार्य के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक साहित्य में, मौसम और जलवायु परिवर्तन को प्राकृतिक घटनाओं के रूप में समझाया गया है, जो पृथ्वी के जलवायु प्रणाली के सिद्धांतों के अनुसार होते हैं, न कि केवल ईश्वर के कृपापूर्वक कार्य के रूप में।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत "प्रमाण" तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें प्राकृतिक घटनाओं को तर्कसंगत रूप से समझने के बजाय, उन्हें ईश्वर की कृपा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आयत 49

आयत का अनुवाद:
"ताकि हम उसके ज़रिए से मुर्दा (वीरान) शहर को ज़िन्दा (आबाद) कर दें और अपनी मख़लूकात में से चैपायों और बहुत से आदमियों को उससे सेराब करें।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईश्वर ने बारिश के द्वारा मरे हुए शहरों को पुनः जीवन दिया।
- **हेतु (Reason):**
  "बारिश से जीवन मिलना" एक विशिष्ट उदाहरण है, लेकिन यह व्यापक रूप से केवल एक विशेष प्राकृतिक घटना है। यह विशेष रूप से धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से सही नहीं हो सकता।
- **उदाहरण (Example):**
  वैज्ञानिक दृष्टिकोण में, बारिश से पर्यावरणीय पुनः निर्माण संभव है, लेकिन इसे केवल दैवी कार्य के रूप में प्रस्तुत करना संकीर्ण दृष्टिकोण हो सकता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में "व्याप्ति" तत्व का पालन करते हुए प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक कार्य के रूप में प्रस्तुत करना तार्किक दृष्टिकोण से गलत है।

आयत 50

आयत का अनुवाद:
"और हमने पानी को उनके दरम्यान (तरह-तरह से) तक़सीम किया ताकि लोग नसीहत हासिल करें मगर अक्सर लोगों ने नाशुक्री के सिवा कुछ न माना।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईश्वर ने पानी को मानवता के लिए लाभकारी रूप में भेजा, लेकिन लोग इसके महत्व को नहीं समझते।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क केवल यह मानता है कि लोग अपनी कृतज्ञता नहीं दिखाते हैं। लेकिन यह प्राकृतिक संसाधनों के व्यवहार का एक असामान्य और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण नहीं देता।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान और उनका सही उपयोग किया जाता है। यह सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी पर आधारित है, न कि केवल ईश्वर के आदेशों पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में "हेतु" का प्रयोग यह दर्शाता है कि प्रकृति के संसाधनों का सही उपयोग और कृतज्ञता दिखाना अनिवार्य है, लेकिन इसका धार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया जाना तर्कसंगत नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	**प्रमाण**	**आयत में "खींचने" की प्रक्रिया का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं दिया गया।**
47	**उपमान**	**रात और दिन का वर्णन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया गया है, लेकिन यह दैवी कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया।**
48	**प्रमाण**	**बारिश की प्रक्रिया को केवल दैवी कृपा के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।**
49	**व्याप्ति**	**प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक कार्य के रूप में प्रस्तुत करना तार्किक दृष्टिकोण से गलत है।**
50	**हेतु**	**प्राकृतिक संसाधनों का तर्कसंगत रूप से उपयोग नहीं किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्राकृतिक घटनाओं को केवल दैवी कार्यों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता। इन आयतों में तर्क और प्रमाण की कमी है और उन्हें धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है।

आयत 51-55 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 51

आयत का अनुवाद:
"और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में ज़रुर एक (अज़ाबे ख़ुदा से) डराने वाला पैग़म्बर भेजते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि यदि ईश्वर चाहता, तो हर बस्ती में एक पैग़म्बर भेज सकता था।
- **हेतु (Reason):**
  यह एक काल्पनिक स्थिति प्रस्तुत करती है, जिसमें ईश्वर का निर्णय किसी विशेष कारण पर आधारित नहीं है। एक विश्वसनीय तार्किक और भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया कि क्यों सभी बस्तियों में पैग़म्बर भेजे गए।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, कोई भी निर्णय विशेष कारणों और उद्देश्य से लिया जाता है, जैसे धर्म, नैतिकता, और समाज का भला, न कि किसी काल्पनिक इच्छा से।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तार्किक रूप से अस्पष्ट है, क्योंकि इसमें कारणों और उद्देश्य का कोई स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया है।

आयत 52

आयत का अनुवाद:
"(तो ऐ रसूल) तुम काफिरों की इताअत न करना और उनसे कुरआन के (दलाएल) से ख़ूब लड़ों।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत पैग़म्बर को काफ़िरों से बहस करने और उनसे लड़ने का आदेश देती है।
- **हेतु (Reason):**
  यह आदेश तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि सहिष्णुता और संवाद के बजाय संघर्ष को बढ़ावा देना समाज में समरसता और तर्क की भावना के विपरीत है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, संवाद और तर्क को सर्वोत्तम उपाय माना जाता है, जैसे वेदांत और न्याय शास्त्र में तर्कसंगत विमर्श की प्रक्रिया।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत संवाद और तर्क की बजाय संघर्ष को बढ़ावा देती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 53

आयत का अनुवाद:
"और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने दरयाओं को आपस में मिला दिया (और बावजूद कि) ये खालिस मज़ेदार मीठा है और ये बिल्कुल खारी कड़वा (मगर दोनों को मिलाया) और दोनों के दरम्यिान एक आड़ और मज़बूत ओट बना दी है (कि गड़बड़ न हो)।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि ईश्वर ने मीठे और खारे पानी को एक साथ मिलाकर एक आड़ बना दी है।
- **हेतु (Reason):**
  यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वर के नियंत्रण में दिखाती है, लेकिन यह सच्चाई से हटकर एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। खारे और मीठे पानी की अलग-अलग मिश्रण प्रक्रिया को जलविज्ञान से समझा जा सकता है, लेकिन इसे दैवी कार्य के रूप में प्रस्तुत करना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंगत है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, प्रकृति के नियमों को स्वयं का कार्य मानते हुए, प्राकृतिक घटनाओं को केवल ईश्वर की कृपा के रूप में देखना वैदिक दृष्टिकोण के खिलाफ है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक कार्यों के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।

आयत 54

आयत का अनुवादः
"और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने पानी (मनी) से आदमी को पैदा किया फिर उसको ख़ानदान और सुसराल वाला बनाया और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ पर क़ादिर है।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि ईश्वर ने पानी से इंसान को पैदा किया।
- **हेतु (Reason):**
  वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मानव जीवन की उत्पत्ति विभिन्न जैविक और रासायनिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप हुई, जो प्राचीन समय से अध्ययन किए जा रहे हैं। इसे केवल दैवी कार्य के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय विज्ञान और दर्शन में, जीवन की उत्पत्ति को प्राकृतिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप समझा जाता है, जैसे प्राकृत तत्वों का संयोजन और जीवन के विकास के जैविक सिद्धांत।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण तत्व के तहत गलत है, क्योंकि इसमें जीवन की उत्पत्ति को केवल दैवी कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो वैज्ञानिक सिद्धांतों के विपरीत है।

आयत 55

आयत का अनुवादः
"और लोग (कुफ़्फ़ारे मक्का) ख़ुदा को छोड़कर उस चीज़ की परसतिश करते हैं जो न उन्हें नफा ही दे सकती है और न नुक़सान ही पहुँचा सकती है और काफ़िर (अबूजहल) तो हर वक़्त अपने परवरदिगार की मुख़ालेफत पर ज़ोर लगाए हुए है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि लोग उन चीजों की पूजा करते हैं, जो उन्हें कोई फायदा नहीं पहुंचा सकतीं।
- **हेतु (Reason):**
  यह एक सामान्य दृष्टिकोण है, लेकिन बिना इस बात के प्रमाण दिए कि पूजा की जाने वाली चीज़ें वास्तव में कोई लाभ नहीं देतीं। कुछ लोग सांस्कृतिक या मानसिक संतुलन के लिए पूजा करते हैं, जो कि एक वैध सामाजिक और मानसिक प्रक्रिया हो सकती है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, पूजा और धार्मिक अनुष्ठान को मानसिक और सामाजिक संतुलन के रूप में देखा जाता है, जो लोगों को मानसिक शांति और सामूहिक साक्षात्कार की ओर अग्रसर करता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें किसी विशेष चीज़ के लाभ या हानि को बिना वैज्ञानिक या मानसिक प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	**प्रमाण**	**काल्पनिक स्थिति का कोई स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया।**
52	**हेतु**	**संघर्ष को बढ़ावा देना तर्कसंगत दृष्टिकोण नहीं है।**
53	**व्याप्ति**	**प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक कार्य के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।**
54	**प्रमाण**	**जीवन की उत्पत्ति को केवल दैवी कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
55	**प्रमेय**	**पूजा की जाने वाली चीज़ों के लाभ का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं दिया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्राकृतिक घटनाओं और मानव गतिविधियों को दैवी कार्यों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से तर्कसंगत नहीं हैं। इनमें से कुछ आयतें वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोणों से असंगत हैं, क्योंकि इनमें प्राकृतिक घटनाओं और सामाजिक क्रियाओं को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखा गया है।

आयत 56-60 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 56

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) हमने तो तुमको बस (नेकी को जन्नत की) खुशबरी देने वाला और (बुरों को अज़ाब से) डराने वाला बनाकर भेजा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत पैग़म्बर के कार्यों को केवल दो भूमिकाओं में सीमित करती है: खुशखबरी देने वाला और डराने वाला।
- **हेतु (Reason):**
  यह एक संकीर्ण दृष्टिकोण है, क्योंकि एक पैग़म्बर या धार्मिक मार्गदर्शक का उद्देश्य केवल डराना और खुशी देना नहीं हो सकता, बल्कि सामाजिक और मानसिक कल्याण, तर्कसंगत संवाद, और समझ बनाने के प्रयासों को भी इसमें समावेश करना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, संत और गुरू की भूमिका केवल चेतावनी देने और पुरस्कार देने तक सीमित नहीं होती, बल्कि वे मानसिक शांति, तर्क, और निष्कलंक व्यवहार की शिक्षा भी देते हैं।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें एक विस्तृत और समग्र मार्गदर्शन का दृष्टिकोण नहीं दिया गया है। केवल दो भूमिकाओं को दिखाया गया है, जबकि जीवन में बहुत सी जटिलताएँ और समस्याएँ होती हैं जिनका समाधान सिर्फ भय और खुशी से नहीं किया जा सकता।

आयत 57

आयत का अनुवाद:
"और उन लोगों से तुम कह दो कि मैं इस (तबलीग़े रिसालत) पर तुमसे कुछ मज़दूरी तो नहीं माँगता हूँ मगर तमन्ना यह है कि जो चाहे अपने परवरदिगार तक पहुँचने की राह पकड़े।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि पैग़म्बर अपनी शिक्षाओं के लिए किसी प्रकार की दैवीय लाभ की उम्मीद नहीं रखते, बल्कि उनका उद्देश्य केवल लोगों को मार्गदर्शन देना है।
- **हेतु (Reason):**
  यह बात यथार्थ में न्यायपूर्ण और आदर्शवादी प्रतीत होती है, क्योंकि समाज में शिक्षकों और मार्गदर्शकों का कार्य किसी व्यक्तिगत लाभ की बजाय कल्याणकारी होता है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दृष्टिकोण में, गुरू या संत कभी अपने अनुयायियों से कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं लेते; उनका उद्देश्य केवल समाज का भला करना होता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण तत्व के अनुरूप है, क्योंकि इसमें पैग़म्बर की शिक्षाओं को समाज के कल्याण के लिए प्रस्तुत किया गया है, और इसमें कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं दिखाया गया।

आयत 58

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) तुम उस (ख़ुदा) पर भरोसा रखो जो ऐसा ज़िन्दा है कि कभी नहीं मरेगा और उसकी हम्द व सना की तस्बीह पढ़ो और वह अपने बन्दों के गुनाहों की वाक़िफ कारी में काफी है (वह ख़ुद समझ लेगा)।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत ईश्वर के बारे में यह बताती है कि वह शाश्वत और नश्वर है, और वह अपने बंदों के कार्यों से पूरी तरह वाकिफ है।
- **हेतु (Reason):**
 यह विश्वासपूर्ण दृष्टिकोण एक अत्यधिक सशक्त और सर्वोच्च ईश्वर की छवि को प्रस्तुत करता है, जो हर स्थिति का निपटारा करने में सक्षम है। हालांकि, यह सिद्धांत किसी विशिष्ट व्यक्तिगत या सामाजिक समाधान के लिए ठोस तर्क की पेशकश नहीं करता।
- **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में, ईश्वर की सत्ता और सर्वज्ञता को स्वीकार किया जाता है, लेकिन उसे केवल नश्वर और शाश्वतता के रूप में सीमित नहीं किया जाता। उसे संसार के तात्त्विक और वास्तविक पहलुओं से जोड़कर समझा जाता है।
- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत व्याप्ति तत्व से मेल खाती है, क्योंकि इसमें ईश्वर की सर्वव्यापकता और असीम क्षमता को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह कुछ हद तक निस्तेज है, क्योंकि वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान इसके माध्यम से नहीं दिया गया है।

आयत 59

आयत का अनुवाद:
"जिसने सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ उन दोनों में है छहः दिन में पैदा किया फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ और वह बड़ा मेहरबान है तो तुम उसका हाल किसी बाख़बर ही से पूछना।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत बताती है कि ईश्वर ने आकाश, पृथ्वी और अन्य सभी चीजों को छह दिन में उत्पन्न किया और वह अपनी महानता में सर्वोच्च है।

- **हेतु (Reason):**
  यह विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण है, जो खगोलीय घटनाओं और ब्रह्मांड की उत्पत्ति को ईश्वर के कार्य के रूप में प्रस्तुत करता है। हालांकि, इसको वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मान्यता नहीं दी जाती, क्योंकि आधुनिक विज्ञान ब्रह्मांड की उत्पत्ति के विभिन्न पहलुओं को विभिन्न सिद्धांतों से समझता है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में ब्रह्मांड की उत्पत्ति को विभिन्न सिद्धांतों द्वारा समझा जाता है, जैसे पुराणों में बताया गया ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना, लेकिन यह किसी विशेष समय सीमा में नहीं बांधता।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यह प्राकृतिक घटनाओं की उत्पत्ति को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, जबकि इसके लिए वैज्ञानिक व्याख्याएं और सिद्धांत उपलब्ध हैं।

आयत 60

आयत का अनुवाद:
"और जब उन कुफ्फारों से कहा जाता है कि रहमान (ख़ुदा) को सजदा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है तुम जिसके लिए कहते हो हम उस का सजदा करने लगें और (इससे) उनकी नफ़रत और बढ़ जाती है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत बताती है कि जब काफ़िरों से कहा जाता है कि वे ईश्वर की पूजा करें, तो वे उसे नकारते हैं और इससे उनकी नफरत और बढ़ जाती है।
- **हेतु (Reason):**
  यह स्थिति केवल एक सांस्कृतिक और धार्मिक विरोध को दर्शाती है, लेकिन यह एक व्यापक रूप से स्वीकार्य तर्क नहीं प्रदान करती। धार्मिक विरोध और नफरत का स्रोत केवल समझ और विश्वास के अभाव से है, न कि ईश्वर की अस्तित्व या महानता से।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, धार्मिक विविधताओं को स्वीकार किया जाता है और कुतूहल या तर्क से समझाने का प्रयास किया जाता है, न कि नफरत और संघर्ष को बढ़ावा देने के रूप में।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें धार्मिक विरोध को नफरत के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो किसी तर्कसंगत या सामाजिक समाधान का हिस्सा नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	**प्रमेय**	**केवल दो भूमिकाओं में सीमित दृष्टिकोण।**
57	**प्रमाण**	**यथार्थ में आदर्शवादी और निराकार दृष्टिकोण।**
58	**व्याप्ति**	**ईश्वर की सर्वज्ञता को सही रूप में प्रस्तुत किया गया, लेकिन जीवन के समस्याओं का समाधान नहीं।**
59	**हेतु**	**प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना।**
60	**प्रमेय**	**धार्मिक विरोध को नफरत के रूप में प्रस्तुत करना, तर्कसंगत समाधान का अभाव।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई जगह पर धार्मिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कसंगतता का अभाव दिखाई देता है। कुछ आयतें आदर्शवादी और नैतिक दृष्टिकोण से समाज के कल्याण की बात करती हैं, लेकिन इनमें वास्तविक जीवन की जटिलताओं और समस्याओं का समाधान नहीं दिया गया है।

आयत 61
आयत का अनुवाद:
"बहुत बाबरकत है वह ख़ुदा जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उन बुर्जों में (आफ़ताब का) चिराग़ और जगमगाता चाँद बनाया।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत दावा करती है कि ईश्वर ने आकाश में बुर्ज (सितारे या ग्रह) बनाए और सूरज और चाँद को इन बुर्जों में रखा।

हेतु (Reason):
यह तर्क इस आधार पर है कि ईश्वर ने आकाश और उसमें स्थित तत्वों को विशेष उद्देश्य से रचा। हालांकि, यह दावा ऐतिहासिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असमर्थित है। आकाशीय पिंडों की गति और उनके निर्माण के बारे में जो जानकारी आधुनिक खगोलशास्त्र से प्राप्त हुई है, वह इस तरह के धार्मिक कथन से मेल नहीं खाती।

उदाहरण (Example):
विज्ञान के अनुसार, सूरज और चाँद अपनी कक्षाओं में स्वतः ही घूमते हैं और इनका स्थान किसी धार्मिक दृष्टिकोण से तय नहीं होता। खगोलशास्त्र के अनुसार, सूरज का निर्माण एक तारे के रूप में हुआ और चाँद पृथ्वी का उपग्रह है, यह किसी ईश्वर द्वारा बुर्जों में स्थापित नहीं किया गया है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय के तत्व के आधार पर सही नहीं ठहराई जा सकती क्योंकि यह बिना वैज्ञानिक प्रमाण के ब्रह्मांड के निर्माण के बारे में दावा करती है।

आयत 62
आयत का अनुवाद:
"और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने रात और दिन (एक) को (एक का) जानशीन बनाया (ये) उस के (समझने के) लिए है जो नसीहत हासिल करना चाहे या शुक्र गुज़ारी का इरादा करें।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत दावा करती है कि ईश्वर ने रात और दिन को एक-दूसरे का प्रतिस्थापन (जानशीन) बनाया है, ताकि लोग नसीहत हासिल कर सकें।

हेतु (Reason):
यह तर्क यह कहता है कि रात और दिन का बदलाव ईश्वर की ओर से एक शिक्षा है। हालांकि, विज्ञान और खगोलशास्त्र के अनुसार, रात और दिन का परिवर्तन पृथ्वी की धुरी की गति के कारण होता है, न कि किसी विशेष उद्देश्य से।

उदाहरण (Example):
जैसा कि भगवद गीता (अध्याय 11, श्लोक 32) में कहा गया है कि यह सृष्टि चक्र शाश्वत है और हर एक तत्व अपनी प्रकृति के अनुसार कार्य करता है। यह प्रकृति और विज्ञान के नियमों का पालन करता है, न कि केवल धार्मिक उद्देश्यों के लिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के खिलाफ है, क्योंकि यह रात और दिन के स्वाभाविक कारणों को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसे एक प्राकृतिक प्रक्रिया मानता है।

आयत 63
आयत का अनुवाद:
"और (ख़ुदाए) रहमान के ख़ास बन्दे तो वह हैं जो ज़मीन पर फिरौतनी के साथ चलते हैं और जब जाहिल उनसे (जिहालत) की बात करते हैं तो कहते हैं कि सलाम (तुम सलामत रहो)।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि सच्चे ईश्वर भक्त वे होते हैं जो विनम्रता से चलते हैं और बुरे व्यवहार या ज्ञान की कमी से बचने के लिए शांत रहते हैं।

हेतु (Reason):
यह तर्क ईश्वर के भक्तों के व्यवहार के रूप में धार्मिक आचार-व्यवहार को प्रस्तुत करता है, लेकिन यह तर्क जीवन की वास्तविकता और विभिन्न संस्कृतियों के बर्ताव से मेल नहीं खाता। धर्म, ज्ञान, और संयम केवल इन बाहरी गतिविधियों के आधार पर निर्धारित नहीं किए जा सकते।

उदाहरण (Example):
 भगवद गीता (अध्याय 16, श्लोक 3) में कहा गया है कि ज्ञान और संतुलन का गुण जीवन में आंतरिक साधना से उत्पन्न होता है, न कि केवल बाहरी व्यवहार से। यह आयत केवल एक बाहरी व्यवहार की सिफारिश करती है, लेकिन आंतरिक आत्मा और ज्ञान पर ध्यान नहीं देती।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत हेति के तत्व से संबंधित तर्क को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल बाहरी रूप को महत्व देती है, जबकि वास्तविक धार्मिक और आध्यात्मिक गुण आंतरिक साधना और ज्ञान से उत्पन्न होते हैं।

आयत 64
 आयत का अनुवाद:
 "और वह लोग जो अपने परवरदिगार के वास्ते सज़दे और क़याम में रात काट देते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
 उपनय (Upanaya)

विश्लेषण और आलोचना:
 प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत यह बताती है कि सच्चे भक्त वे हैं जो पूरी रात अपने परवरदिगार के लिए प्रार्थना और ध्यान करते हैं।

हेतु (Reason):
 यह तर्क कहता है कि रात भर प्रार्थना और ध्यान करना सच्चे भक्तों की विशेषता है। हालांकि, यह विचार केवल धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है और इसे हर व्यक्ति या हर संस्कृति में एक सार्वभौमिक मूल्य के रूप में लागू नहीं किया जा सकता।

उदाहरण (Example):
 भगवद गीता (अध्याय 9, श्लोक 22) में भगवान ने कहा है कि जो लोग सच्चे भक्त होते हैं वे अपनी कर्तव्यों और जीवन में संतुलन बनाए रखते हैं, न कि केवल धार्मिक अनुष्ठान पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत उपनय के तत्व को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह एक विशेष धार्मिक व्यवहार को सार्वभौमिक रूप से लागू करने का प्रयास करती है, जबकि यह हर संस्कृति और व्यक्ति के लिए समान नहीं हो सकता।

आयत 65

आयत का अनुवाद:

"और वह लोग जो दुआ करते हैं कि परवरदिगारा हम से जहन्नुम का अज़ाब फेरे रहना क्योंकि उसका अज़ाब बहुत (सख़्त और पाएदार होगा)।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत कहती है कि सच्चे भक्त वे होते हैं जो खुद को जहन्नुम (नरक) के अज़ाब से बचाने के लिए दुआ करते हैं।

हेतु (Reason):

यह तर्क धार्मिक डर और नरक के भय पर आधारित है। जबकि यह एक धार्मिक विश्वास है, इसके आधार पर कर्मों का मूल्यांकन करना और भय को प्रेरित करना हर व्यक्ति के लिए एक सार्वभौमिक मार्गदर्शक नहीं हो सकता।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) में भगवान ने कहा है कि हमें अपने कर्मों का फल भली-भांति समझकर काम करना चाहिए, न कि केवल डर या भय से कर्म करना चाहिए।

निगमन (Conclusion):

यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि यह एक ही दृष्टिकोण को सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू करती है, जबकि वास्तविकता में प्रत्येक व्यक्ति का धार्मिक और मानसिक दृष्टिकोण अलग हो सकता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

61	प्रमेय	आकाशीय पिंडों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई आधार नहीं
62	व्याप्ति	रात और दिन के बदलाव का तर्क शास्त्रीय रूप से गलत
63	हेति	बाहरी व्यवहार को आंतरिक साधना और ज्ञान से जोड़ने की आवश्यकता है
64	उपनय	धार्मिक अनुष्ठान को सार्वभौमिक रूप से लागू करना मुश्किल है
65	व्याप्ति	भय आधारित कर्मों का सार्वभौमिक रूप से समर्थन नहीं किया जा सकता

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत धार्मिक आस्थाएं तात्त्विक दृष्टिकोण से बहुसंस्कृतिवादी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपर्याप्त हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांत, जैसे प्रमेय, व्याप्ति, हेति, और उपनय, इन आयतों के तर्कों का समर्थन नहीं करते हैं।

आयत 65

आयत का अनुवाद:

"बेशक वह बहुत बुरा ठिकाना और बुरा मक़ाम है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत दावा करती है कि "वह बहुत बुरा ठिकाना और बुरा मक़ाम है" का संदर्भ किसी दंड, अपराध या नरक की स्थिति से है।

हेतु (Reason):

यह तर्क इस आधार पर खड़ा है कि किसी को एक बुरा स्थान या बुरी स्थिति की कल्पना करना केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से संभव है, लेकिन यह तर्क वैज्ञानिक या तार्किक दृष्टिकोण से आधारहीन है। क्या यह "बुरा ठिकाना" केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, या इसका कोई अनुभवजन्य प्रमाण भी है?

उदाहरण (Example):
विज्ञान और दर्शन के अनुसार, किसी भी स्थान या स्थिति को "बुरा" नहीं कहा जा सकता जब तक उसके बारे में अनुभवजन्य प्रमाण न हों। यथार्थ की परिभाषा अधिकतर भौतिक और मानसिक प्रक्रियाओं से जुड़ी होती है, न कि केवल धार्मिक परिभाषाओं से।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि यह किसी अनुभवजन्य प्रमाण पर आधारित नहीं है, और इसे केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है, जो व्यापक रूप से तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असमर्थित है।

आयत 66
आयत का अनुवादः
"और वह लोग कि जब खर्च करते हैं तो न फुज़ूल ख़र्ची करते हैं और न तंगी करते हैं और उनका ख़र्च उसके दरमेयान औसत दर्जे का रहता है।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचनाः
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि सच्चे धार्मिक लोग खर्च करने में न तो अत्यधिक खर्च करते हैं और न ही बहुत कंजूस होते हैं, उनका खर्च संतुलित और औसत स्तर का होता है।

हेतु (Reason):
यह तर्क इस आधार पर है कि संतुलित खर्च करने से व्यक्ति को धार्मिक दृष्टिकोण से अच्छा माना जाएगा। हालांकि, यह तर्क किसी एक आर्थिक दृष्टिकोण या जीवनशैली के लिए सार्वभौमिक नहीं हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अलग हो सकती है, और कुछ व्यक्तियों को जरूरत के हिसाब से अधिक खर्च करना पड़ सकता है।

उदाहरण (Example):
वेदांत के अनुसार, जीवन में संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है, लेकिन यह संतुलन हर व्यक्ति की स्थिति, परिवार, और जरूरतों के अनुसार बदल सकता है। यदि एक व्यक्ति जरूरतमंद है और उसे अधिक खर्च करना पड़ता है, तो इसे फुज़ूलखर्ची नहीं माना जा सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत संतुलित खर्च के लिए एक सामान्य दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन यह हर व्यक्ति की वास्तविक परिस्थिति को ध्यान में नहीं रखती, और इसलिए यह तर्क सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता।

आयत 67
आयत का अनुवाद:
"और वह लोग जो ख़ुदा के साथ दूसरे माबूदों की परसतिश नहीं करते और जिस जान के मारने को ख़ुदा ने हराम कर दिया है उसे नाहक़ क़त्ल नहीं करते और न ज़िना करते हैं और जो शख़्स ऐसा करेगा वह आप अपने गुनाह की सज़ा भुगतेगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि ईश्वर के साथ किसी अन्य देवता की पूजा करना, किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या करना, या व्यभिचार करना अत्याचार है, और इन कार्यों का दंड दिया जाएगा।

हेतु (Reason):
यह तर्क इस आधार पर प्रस्तुत किया गया है कि ये तीन कार्य गहरे धार्मिक और नैतिक अपराध माने जाते हैं। हालांकि, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से देखा जाए तो ये कार्य विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न तरीके से परिभाषित किए जा सकते हैं, और सभी संस्कृतियों में इन्हें समान रूप से अपराध नहीं माना जाता।

उदाहरण (Example):
भारतीय संस्कृति में कई देवी-देवताओं की पूजा की जाती है, और विभिन्न धर्मों के अनुयायी अपनी आस्थाओं के अनुसार पूजा करते हैं। इसलिए, किसी एक धर्म के अनुसार परिभाषित अपराध को सार्वभौमिक रूप से लागू करना मुश्किल है। यह एक आस्थागत मुद्दा बन सकता है, लेकिन इसे कानून और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से उचित नहीं ठहराया जा सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि यह एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण से दूसरे विश्वासों को अस्वीकार करती है, जबकि हर व्यक्ति का दृष्टिकोण और विश्वास अलग हो सकता है।

आयत 68

आयत का अनुवाद:

"कि क़यामत के दिन उसके लिए अज़ाब दूना कर दिया जाएगा और उसमें हमेशा ज़लील व ख़वार रहेगा।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह दावा करती है कि यदि कोई व्यक्ति अपराध करता है, तो उसे क़यामत के दिन दंड मिलेगा और वह हमेशा अपमानित रहेगा।

हेतु (Reason):

यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि अपराधियों को क़यामत के दिन दंड मिलेगा। हालांकि, यह किसी विशेष धार्मिक विश्वास का हिस्सा है और यह सभी संस्कृतियों और समाजों में एक समान रूप से लागू नहीं हो सकता।

उदाहरण (Example):

धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से, क़यामत और दंड केवल धार्मिक परिप्रेक्ष्य से संबंधित हैं, जबकि प्रत्येक व्यक्ति के पास अपने कर्मों के परिणाम भुगतने का अवसर होता है, जो भौतिक जीवन में ही हो सकता है, न कि किसी धार्मिक अंत के बाद।

निगमन (Conclusion):

यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि यह केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक रूप से लागू करती है, जबकि यह हर व्यक्ति के लिए एक समान नहीं हो सकता।

आयत 69

आयत का अनुवाद:

"मगर (हाँ) जिस शख़्स ने तौबा की और इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो (अलबत्ता) उन लोगों की बुराइयों को ख़ुदा नेकियों से बदल देगा और ख़ुदा तो बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि यदि कोई व्यक्ति पापों से तौबा करता है, ईमान लाता है, और अच्छे कर्म करता है, तो ईश्वर उसे माफ़ कर देगा और उसके पापों को अच्छे कर्मों में बदल देगा।

हेतु (Reason):
यह तर्क इस आधार पर खड़ा है कि तौबा और अच्छे कर्मों से ईश्वर की कृपा प्राप्त की जा सकती है, जो धार्मिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य हो सकता है। हालांकि, यह दृष्टिकोण न्यायिक और तार्किक दृष्टिकोण से इस विचार पर निर्भर नहीं करता कि पाप और पुण्य का सही मूल्यांकन क्या है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्या 9, श्लोक 22) में भगवान ने कहा है कि जो व्यक्ति सच में अच्छे कर्म करता है और परमात्मा में विश्वास रखता है, उसकी गलतियाँ माफ़ की जाती हैं। लेकिन यह तर्क हर व्यक्ति की आस्थाओं और जीवन शैली पर आधारित होता है और हर किसी के लिए समान नहीं हो सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत हेति के सिद्धांत से मेल खाती है क्योंकि यह तौबा और अच्छे कर्मों के आधार पर दैवीय कृपा प्राप्त करने की संभावना को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सत्य है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
65	प्रमेय	”बुरा ठिकाना” का कोई अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है
66	हेति	संतुलित खर्च का सार्वभौमिक सिद्धांत नहीं
67	प्रमेय	धार्मिक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता
68	व्याप्ति	केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से अपराध का दंड
69	हेति	तौबा और अच्छे कर्मों पर आधारित विश्वास सार्वभौमिक नहीं है

समग्र निष्कर्षः
इन आयतों में धार्मिक आस्थाओं को प्रमुखता दी गई है, जो अनुभवजन्य और तार्किक दृष्टिकोण से असमर्थित हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के आधार पर, ये आयतें केवल एक विशिष्ट धार्मिक विश्वास को दर्शाती हैं, जबकि यह हर व्यक्ति के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकती।

आयत 70
आयत का अनुवादः
"मगर (हाँ) जिस शख़्स ने तौबा की और इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो (अलबत्ता) उन लोगों की बुराइयों को ख़ुदा नेकियों से बदल देगा और ख़ुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्वः

हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि यदि व्यक्ति तौबा करता है, इमान लाता है, और अच्छे कर्म करता है, तो उसके पिछले पापों को ईश्वर अच्छे कर्मों से बदल देगा और वह दयालुता और क्षमा का पात्र होगा।

हेतु (Reason):
यह तर्क इस आधार पर खड़ा है कि तौबा और अच्छे कर्मों से ईश्वर की कृपा प्राप्त की जा सकती है। हालांकि, यह तर्क शुद्ध धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तार्किक या अनुभवजन्य आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, पाप और पुण्य का मूल्यांकन केवल कर्मों से ही नहीं, बल्कि उनके कारण और प्रभाव से भी किया जाता है।

यह आयत "अच्छे कर्म" और "तौबा" को एक दूसरे के पूरक के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन यह विचार एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसे सभी संस्कृतियों और समाजों में समान रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

उदाहरण (Example):
धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से देखा जाए तो कोई भी व्यक्ति अपनी गलतियों के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेता है और अपने कार्यों का परिणाम भुगतता है। अच्छे कर्मों से कोई व्यक्ति अपने पापों को "बदल" नहीं सकता, क्योंकि हर कर्म का अपना कारण और परिणाम होता है। इस विचार को उदाहरण स्वरूप देखा जा सकता है

कि कोई व्यक्ति यदि कानूनी अपराध करता है और बाद में तौबा करता है, तो न्यायालय उसे बिना सजा दिए केवल अच्छे कर्मों की वजह से मुक्त नहीं कर सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत हेति (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से तौबा और अच्छे कर्मों के द्वारा पापों के बदलने को सत्य मानती है। तार्किक दृष्टिकोण से, किसी भी पाप या अपराध को अनुभवजन्य तरीके से "बदला" नहीं जा सकता, और कर्मों के परिणाम को केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर निर्धारित करना सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
70	हेति	तौबा और अच्छे कर्मों से पापों का बदलना केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो तार्किक रूप से सार्वभौमिक नहीं है।

समग्र निष्कर्ष:
यह आयत भी एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसे तार्किक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से चुनौती दी जा सकती है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, पाप और पुण्य का मूल्यांकन केवल कर्मों से ही नहीं, बल्कि उनके प्रभावों और कारणों से भी किया जाता है।

आयत 71 से 76 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 71:

आयत का अनुवाद:
"और जिस शख़्स ने तौबा कर ली और अच्छे अच्छे काम किए तो बेशक उसने ख़ुदा की तरफ (सच्चे दिल से) हक़ीक़तन रुजू की।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** जो व्यक्ति तौबा करता है और अच्छे काम करता है, वह ख़ुदा की ओर सच्चे दिल से रुजू करता है।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क प्रकट करता है कि अच्छे कर्म और तौबा करना व्यक्ति के दिल की सच्चाई को दर्शाता है। लेकिन इस विचार को एकमात्र कर्मों पर आधारित करने का कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** गीता में कर्मों का निष्कलंक महत्व है, लेकिन दिल की सच्चाई और आंतरिक शुद्धता भी महत्वपूर्ण है (भगवद गीता 9.22)।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल कर्मों पर आधारित एक सीमित दृष्टिकोण पेश करती है, जो पूरे मानवता के लिए सार्वभौमिक नहीं हो सकती, क्योंकि आंतरिक विश्वास और मानसिक स्थिति भी महत्वपूर्ण हैं।

आयत 72:

आयत का अनुवाद:
"और वह लोग जो फरेब के पास ही नहीं खड़े होते और वह लोग जब किसी बेहूदा काम के पास से गुज़रते हैं तो बुज़ुर्गाना अंदाज़ से गुज़र जाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** अच्छे लोग उन गतिविधियों से दूर रहते हैं जो उनके आस्थाओं के विपरीत हैं।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क यह है कि नकारात्मक या बेहूदी गतिविधियों से दूर रहना बुज़ुर्ग और शिक्षित लोगों की पहचान है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी नैतिकता और समाजिक दायित्व के संदर्भ में अच्छे आचारों की आवश्यकता को महत्व दिया गया है (मनुस्मृति, 4.138)।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में निष्कलंक समाजिक मर्यादा की आवश्यकता का प्रसार किया गया है, लेकिन यह परिधि में सीमित दृष्टिकोण पेश करता है, जो सभी संस्कृतियों और आस्थाओं के लिए अनुकूल नहीं हो सकता।

आयत 73:

आयत का अनुवाद:
"और वह लोग कि जब उन्हें उनके परवरदिगार की आयतें याद दिलाई जाती हैं तो बहरे अंधे होकर गिर नहीं पड़ते बल्कि जी लगाकर सुनते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यास (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो लोग ईश्वर की आयतों को समर्पण से सुनते हैं, वे धार्मिक होते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क ईश्वर की आयतों को बिना किसी विकृति के सुनने को धार्मिकता और आस्था की निशानी मानता है।**
- **उदाहरण (Example): गीता में कहा गया है कि सच्चे भक्त वे हैं जो ईश्वर के संदेशों को समझने और आत्मसात करने की कोशिश करते हैं (भगवद गीता 10.8)।**
- **निगमन (Conclusion): हालांकि इस आयत में ईश्वर की आयतों का महत्व बताया गया है, यह सामान्य विचार सभी परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता, क्योंकि लोग अपनी आस्थाओं और संस्कृतियों के आधार पर भिन्न होते हैं।**

आयत 74:

आयत का अनुवाद:
"और वह लोग जो (हमसे) अर्ज करते हैं कि परवरदिगार हमें हमारी बीबियों और औलादों की तरफ से आँखों की ठंडक अता फरमा और हमको परहेज़गारों का पेशवा बना।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर से आशीर्वाद की मांग करना और परहेज़गारों का नेता बनने की प्रार्थना करना उचित है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क इस विचार को प्रस्तुत करता है कि भगवान से शक्ति और आशीर्वाद की मांग करना ठीक है, परंतु यह विचार केवल व्यक्तिगत लाभ और परिवारिक सुख के इर्द-गिर्द केंद्रित है।**

- **उदाहरण (Example):** गीता के अनुसार, हमें अपने कार्यों में निष्कलंकता और अनासक्ति रखनी चाहिए, न कि केवल व्यक्तिगत सुख और शांति के लिए भगवान से मांग करनी चाहिए (भगवद गीता 18.66)।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत उन लोगों को परितोष देती है जो केवल व्यक्तिगत लाभ की इच्छा रखते हैं, जो एक भ्रामक दृष्टिकोण है।

आयत 75:

आयत का अनुवाद:
"ये वह लोग हैं जिन्हें उनकी जज़ा में (बेहष्त के) बाला ख़ाने अता किए जाएँगे और वहाँ उन्हें ताज़ीम व सलाम (का बदला) पेश किया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** अच्छे कर्म करने वालों को स्वर्ग में पुरस्कार मिलेगा।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क धार्मिक कर्मों के पुरस्कार के रूप में स्वर्ग के अस्तित्व की पुष्टि करता है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में कर्मों का फल और पुण्य का महत्व है, परंतु यह सत्य है कि स्वर्ग और नरक के अस्तित्व के बारे में विभिन्न विचारधाराएँ हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत स्वर्ग के अस्तित्व को प्रमाणित करती है, लेकिन इसका कोई निश्चित और अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।

आयत 76:

आयत का अनुवाद:
"ये लोग उसी में हमेशा रहेंगें और वह रहने और ठहरने की अच्छी जगह है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** स्वर्ग में प्रवेश करने वाले लोग वहां हमेशा रहेंगे।

- **हेतु (Reason): यह तर्क परलोक के अस्तित्व को और वहां रहने की स्थायी स्थिति को स्वीकार करता है।**
- **उदाहरण (Example): यह विचार भारतीय दर्शन के कर्मफल के सिद्धांत से मिलता है, लेकिन पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत में कोई निर्णायक प्रमाण नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का आधार अनुभवजन्य प्रमाण से बाहर है, जो इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं बनाता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	प्रमेया	तौबा और अच्छे कामों को सच्चाई से जोड़ने का कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है।
72	उपमान	सामाजिक मर्यादा को सार्वभौमिक रूप से लागू करना उचित नहीं है।
73	व्याप्ति	धार्मिकता का निर्धारण केवल ईश्वर की आयतों को सुनने से नहीं किया जा सकता।
74	हेतु	व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रार्थना करना एक सीमित दृष्टिकोण है।
75	प्रमाण	स्वर्ग और नरक के अस्तित्व का कोई निश्चित प्रमाण नहीं है।
76	प्रमाण	स्वर्ग में स्थायी रहने का विचार अनुभवजन्य प्रमाण से बाहर है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिकता, कर्म और आस्था के बारे में विचार प्रस्तुत किए गए हैं, लेकिन ये दृष्टिकोण सार्वभौमिक और तर्कसंगत नहीं हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, तर्क, प्रमाण और अनुभवजन्य सत्य का पालन इन आयतों में नहीं किया गया है। इसलिए ये विचार सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकते।

आयत 77 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 77:

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर दुआ नहीं किया करते तो मेरा परवरदिगार भी तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता। तुमने तो (उसके रसूल को) झुठलाया तो अन क़रीब ही (उसका वबाल) तुम्हारे सर पड़ेगा।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अगर लोग दुआ नहीं करते, तो ईश्वर उनकी परवाह नहीं करता और उनके लिए दुआ न करने की सजा होगी।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क इस विचार पर आधारित है कि ईश्वर को केवल दुआ करने से प्रसन्नता मिलती है और जो लोग दुआ नहीं करते, वे दंड के पात्र होते हैं। यह तर्क एकतरफा और पक्षपाती नजर आता है।**
- **उदाहरण (Example): गीता में कहा गया है कि ईश्वर सभी से समान रूप से प्रेम करता है और वह कर्मों के अनुसार फल देता है, न कि केवल दुआ करने पर (भगवद गीता 9.22)।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ईश्वर की दया और समानता के सिद्धांत के खिलाफ जाती है। न्याय दर्शन के अनुसार, इस तरह के विचारों में तर्क का अभाव है, क्योंकि यह केवल दुआ पर निर्भर करता है और ईश्वर के न्यायपूर्ण और सर्वसमावेशक दृष्टिकोण का उल्लंघन करता है।**

सारणी (आयत का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
77	हेतु	दुआ न करने को सजा से जोड़ने का तर्क पक्षपाती और तर्कहीन है।

समग्र निष्कर्ष:

इस आयत में यह दावा किया गया है कि दुआ न करने पर ईश्वर की परवाह नहीं होती, लेकिन यह तर्क न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है। न्याय दर्शन के अनुसार, ईश्वर का दृष्टिकोण निष्पक्ष और तर्कसंगत होना चाहिए, न कि किसी एक कार्य (जैसे दुआ करना) पर आधारित होना चाहिए। इसलिए यह आयत सार्वभौमिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण के लिए अनुकूल नहीं है।